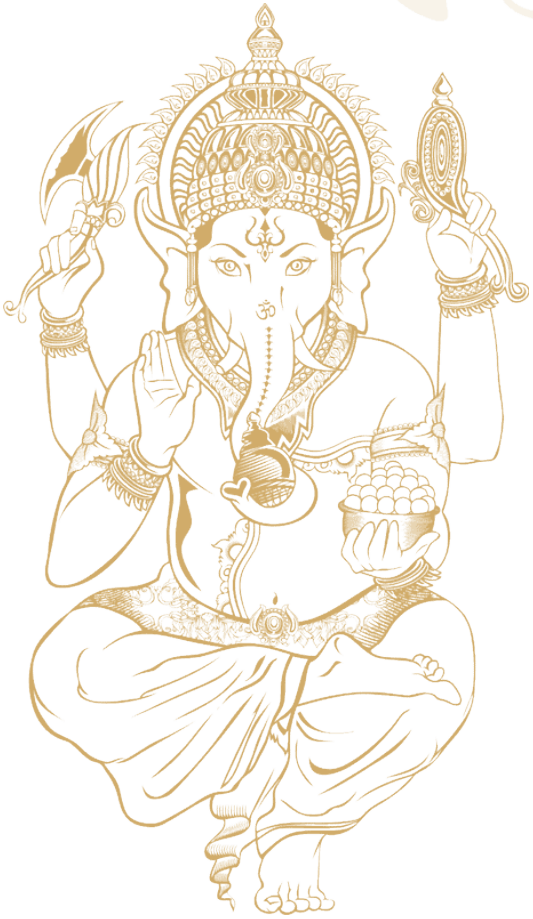

Mr. Gaurav

15 Mar 1994

08:43 AM

Karmala

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119902001

तिथि 15/03/1994 **समय** 08:43:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Karmala **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:46:49
अक्षांश 18:25:00 उत्तर **रेखांश** 75:15:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:29:00 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	19:44:00 घं
वेलान्तर	00:09:02 घं
सूर्योदय	06:37:51 घं
सूर्यास्त	18:38:29 घं
चैत्रादि संवत	2050
शक संवत	1915
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	3
नक्षत्र	अश्विनी
योग	ब्रह्म
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चू-चूड़ामणि
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	शुक्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

केतु 6वर्ष 1मा 13दि

सूर्य

27/04/2020
28/04/2026

सूर्य	15/08/2020
चन्द्र	14/02/2021
मंगल	22/06/2021
राहु	16/05/2022
गुरु	04/03/2023
शनि	14/02/2024
बुध	21/12/2024
केतु	28/04/2025
शुक्र	28/04/2026

योगिनी

भ्रामरी 3वर्ष 5मा 29दि

पिंगला

12/09/2024
13/09/2026

पिंगला	23/10/2024
धान्या	23/12/2024
भ्रामरी	14/03/2025
भद्रिका	23/06/2025
उल्का	23/10/2025
सिद्धा	14/03/2026
संकटा	23/08/2026
मंगला	13/09/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			08:34:11	मेष	अश्विनी	3	केतु	गुरु	---	0:00			
सूर्य			00:31:45	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	चंद्र	मित्र राशि	1.39	कलत्र	पितृ	वध
चंद्र			01:40:29	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	सम राशि	1.21	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	12:15:22	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	सम राशि	1.28	भ्रातृ	भ्रातृ	साधक
बुध			03:13:15	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	शुक्र	सम राशि	1.10	पुत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		20:32:40	तुला	विशाखा	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	0.80	आत्मा	धन	वध
शुक्र			14:20:37	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	राहु	उच्च राशि	1.22	अमात्य	कलत्र	मित्र
शनि			11:38:15	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मूलत्रिकोण	1.18	मातृ	आयु	साधक
राहु	व		01:41:45	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		01:41:45	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	सम राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

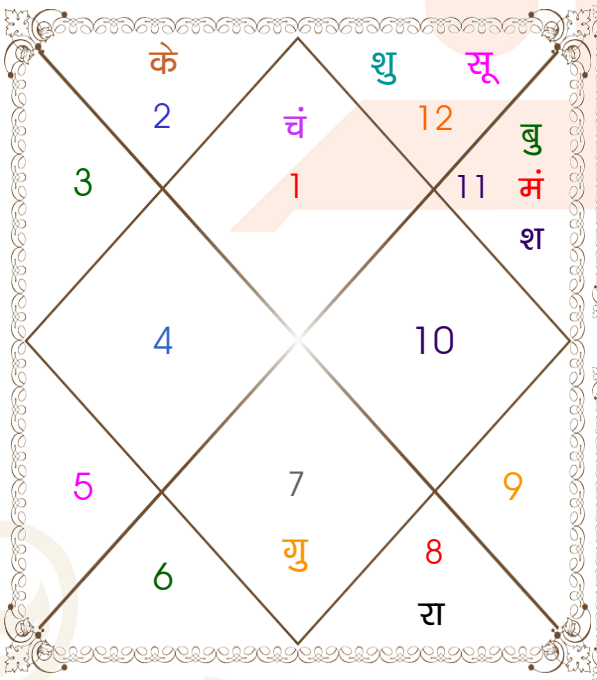

चन्द्र कुंडली

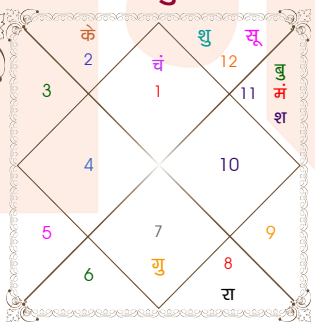

नवमांश कुंडली

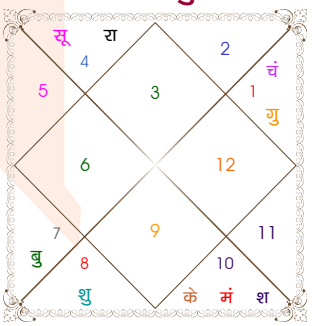

सर्वाष्टकवर्ग

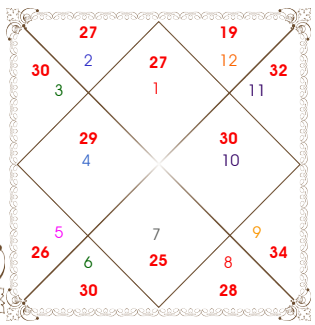

दशमांश कुंडली

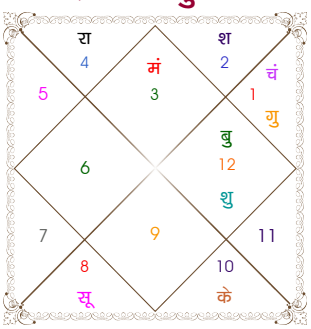

नक्षत्रफल

आपका जन्म अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि अश्व, गण देव, नाड़ी आद्य, वर्ण क्षत्रिय तथा वर्ग सिँह होगा। अश्विनी के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका जन्म नाम चु या चू अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा-चुन्नी लाल ।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ है। इसके प्रथम चरण में जन्म होने से जातक पिता के लिये कष्टकारी होता है। अतः इसकी शान्ति अवश्य ही करनी चाहिए। यह कार्य जन्म के 27 दिन के अन्दर सम्पन्न हो जाना चाहिए। इसके लिए आपको इस नक्षत्र के कम से कम 28 हजार जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन के बाद जब पुनः यह नक्षत्र आये तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का विधि पूर्वक हवन कराना चाहिए। इस प्रकार शास्त्रीय विधि से उक्त नक्षत्र की शान्ति करने से अशुभ दोष कम हो जाता है तथा शुभ फलों की प्राप्ति होती है। जप अश्विनी नक्षत्र के मंत्र का करना चाहिए।

मंत्र - ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आप श्रृंगार करने में या आभूषणों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित रहेंगे। जीवन में आपके सभी कार्य चतुराई एवं बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। सुन्दर एवं रूपवान होने के कारण सभी लोग आपसे आत्मीयता स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे। साथ ही आप भाग्यशाली भी होंगे।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

ज्ञान प्राप्त करने में बाल्यकाल से ही आपकी गहन रूचि रहेगी तथा लौकिक व्यवहार सभी के प्रति विनयशील रहेगा। आपका यश दूर-दूर तक फैलेगा। तथा जीवन का अधिकांश भाग सुखपूर्वक व्यतीत होगा। धन, ऐश्वर्य तथा मान सम्मान की आपके पास कभी भी कमी नहीं रहेगी।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

सत्य का पालन करना आपके जीवन का प्रमुख ध्येय होगा तथा सेवा भाव

स्वाभाविक रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगा। सम्पूर्ण प्रकार की भौतिक सम्पतियों का स्वामित्व प्राप्त करने का सौभाग्य आपको प्राप्त होगा। साथ ही सुन्दर तथा सुशील पत्नी एवं सदगुणों से युक्त सुपुत्र आपकी गरिमा की सदैव अभिवृद्धि करेंगे।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

सांसारिक कार्यो में व्यस्तता के कारण आप अपने शरीर या खानपान का ध्यान नहीं रख पायेगें फलस्वरूप देह की स्थूलता बढ सकती है। अपने ऐश्वर्य, वैभव एवं सदव्यवहार के कारण समाज में आप विशेष रूप से लोक प्रिय रहेंगे तथा सामान्य एवं विशिष्ट दोनों वर्गो का सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

मेष राशि होने के कारण आप अल्प भोजन करने वाले होंगे। आप अपने

माता-पिता की इकलौती सन्तान हो सकते हैं। यदि और भाई बहिन हुए तो आप निश्चित रूप से उनमें सर्वश्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नेत्र लाली लिये हुए गोल होंगे। किसी आकस्मिक चोट या घाव के कारण आपके सिर में निशान होगा तथा सिर में बाल भी कम होंगे। आपके हाथ तथा पैर विशेष कान्ति से युक्त होंगे। जल से आप स्वभाव से ही भयभीत रहेंगे। साहस का आप में अभाव नहीं होगा तथा जीवन में विषम से विषम परिस्थितियों का सामना करने में आप सफल होंगे। समाज से आपको यथोचित सम्मान की प्राप्ति होगी। आप चंचल बुद्धि के होंगे तथा धन को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करेंगे, जिससे कभी-कभी आपको परेशानियों का सामना करना पडेगा। आपके पास मित्रों तथा सहयोगियों की बहुलता रहेगी। पुत्र भी पुत्रियों की अपेक्षा अधिक होंगे। स्त्री जाति आपकी विशेष रूप से कमजोरी रहेगी। लेकिन सभी से स्नेह करना आपके स्वभाव का अंग होगा। फलतः समाज के सभी वर्गों में यथोचित सम्मान अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप की प्रवृति शीघ्र ही प्रसन्न होने वाली होगी। इधर उधर परिभ्रमण करना आपको रूचिकर लगेगा। विशेषतः ऐसे स्थानों की सैर जहाँ के बारे में अन्य लोग आसानी से सोच भी नहीं सकते। आप के हाथ में शौर्य अथवा साहस प्रतीक चिन्ह चक्र पताका आदि हो सकते हैं। स्त्री वर्ग में आप विशेष प्रिय तथा सम्मान एवं आदर के पात्र समझे जाएंगे। आपके व्यक्तित्व की जो प्रमुख विशेषता होगी, वह यह कि सेवा या सहयोग का भाव आपके अर्न्तमन में हमेशा विद्यमान रहेगा चाहे आप कैसी भी विषम परिस्थितियों का सामना कर रहे हों।

वृतातामृदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व देना तथा स्त्रियों के प्रति अधिक आकर्षण रखना आपकी प्रवृति होगी तथा आपकी इस प्रवृति से आपके श्रेष्ठ या सम्माननीय संबंधी असन्तुष्ट होंगे। जिस के कारण आप उनसे या वे आप से अलग हो सकते हैं। चूँकि आपके अधिकांश कार्य स्त्री के कथनानुसार ही सम्पन्न होंगे। अतः आपसी वैमनस्य का यह भी एक

प्रमुख कारण रहेगा। धन तथा पुत्र से आप हमेशा युक्त रहेंगे। आपको वैभव की कोई कमी नहीं होगी तथा समाज में अच्छा यश प्राप्त होगा। समयानुसार आप मांस, मदिरा इत्यादि अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण या सेवन भी कर सकते हैं।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

आपके स्वभाव में स्वाभाविक तेज परिलक्षित होगा। यह तेज कभी कभी क्रोध का रूप भी धारण करेगा जिससे समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। प्रकृति आपकी चंचल होगी अतः अवसर पड़ने पर आप मिथ्या भाषण से भी नहीं चूकेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्कताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी। सिर से आप गंजे भी हो सकते हैं। गर्म पदार्थों से परहेज रखें तथा दुर्घटनाओं से भी बचने का प्रयत्न करें तथा शरीर का पूर्ण रूप से सावधानी पूर्वक ध्यान रखें अन्यथा मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आपका जन्म देवगण में हुआ है। अतः आपकी वाणी मधुर तथा हमेशा सत्य बोलने वाली होगी। वाणी से आपके द्वारा कभी भी दूसरों को कष्ट नहीं पहुँचेगा। आप सब कुछ सादगी से ग्रहण करने की प्रतिभा से सम्पन्न होंगे। सात्विक तथा अल्प भोजन करना आपको रूचिकर लगेगा। महान लोगों तथा विद्वानों द्वारा वर्णित समस्त गुण आप में विद्यमान रहेंगे। धन, वैभव, ऐश्वर्य एवं भौतिक सम्पदा की आप के पास कमी नहीं होगी तथा इसका स्वामित्व आपको आजीवन प्राप्त होगा।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

देखने में आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। दान देना आपकी स्वभाविक प्रवृति होगी तथा जरूरतमन्द लोग तथा संस्थाए आपकी हृदय से आभारी रहेंगे। आप सादगी पसन्द

व्यक्ति होंगे। छल कपट तथा प्रपंच का नाम मात्र का भी आपके अन्दर समावेश नहीं होगा तथा विद्वान योग्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

अश्वयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति के होंगे तथा प्रत्येक कार्य को आप स्वतंत्रता पूर्वक सम्पन्न करना चाहेंगे। कोई भी बाहरी दबाब या सलाह आपको पसन्द नहीं आएगी। साथ ही आप अच्छे गुणों से युक्त रहेंगे। साहस तथा बहादुरी की आप में कमी नहीं होगी। जो भी कार्य करेंगे उसे साहस तथा बहादुरी के साथ पूर्ण करेंगे। समाज में आपका अच्छा प्रभुत्व रहेगा। सभी लोग दिल से आपका आदर करेंगे। आपका स्वर कभी-कभी थोड़ा घर्घराहट या खरखरापन लिए होगा। आपके अन्दर स्वामिभक्ति के पूर्ण गुण पाए जायेंगे अतः जिसके पास भी या जिसके लिए कार्य करेंगे ईमानदारी के साथ करेंगे आपसे किसी को कभी भी कोई शिकायत नहीं होगी।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति

उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा षष्ठी, एकादशी दोनों शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल अर्थात् बुरे फल देने वाले होंगे अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ नवगृहनिमार्ण जायदाद का कय विकय, लेन देन आदि महत्वपूर्ण कार्य न करें अन्यथा अशुभ फल होंगे। इसके अतिरिक्त मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याग दें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

जब आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक परेशानियों में वृद्धि हो रही हो या व्यापार में निरन्तर या अन्तर में नुकसान हो रहा हो या निकट भविष्य में किसी भी प्रकार की हानि की संभावना हो रही हो तो उस समय आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए। साथ ही सोना, ताम्र, गेहूँ, गुड़, लालवस्त्र, लालकनेर का फूल, घी इन पदार्थो का यथा शक्ति दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य आचार्य से कम से कम सात हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव भी न्यून होगा।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।